History of Archaeology - Down to the Evolution of Three Age System

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-VIII, Sem. – II

मनुष्य के मन में अपने अतीत के बारे में जानने की प्रबल इच्छा रहती है। प्रायः सभी देशों के प्राचीन साहित्यों में मानव जाति के आदिकाल की कहानियाँ रहती है, इसमें कुछ कल्पित है तथा कुछ वास्तविकता पर आधारित है। जिस मनुष्य के अतीत की कुछ जानकारी इन कहानियों के आधार पर प्राप्त की जा सकती है, जैसे - भारत और मेसोपोटामिया में जलप्लावन की कथा मिलती है। बहुत दिनों तक इन कहानियों को काल्पनिक माना जाता था, परन्तु मेसोपोटामिया में पुरातत्वज्ञों को इस सम्बन्ध में जो प्रमाण उपलब्ध हुए है उनसे यह साबित होता है कि इन कहानियों में जो तथ्य बताये गए है उनका आधार सत्य घटनाओं पर आधारित था। भारतीय परंपरा के अनुसार मानव समाज का विकास चार युगों अर्थात सत्ययुग, द्वापरयुग, त्रेतायुग और कलयुग में संपन्न हुआ है। इसमें पहला समाज जो सत्ययुग कहलाया, वो समाज सत्य और न्याय पर आधारित था। पर समय के साथ - साथ जो भौतिक विकास हुए उसके साथ ही साथ नैतिक मूल्यों का हरास भी हुआ। इसी प्रकार की कथाएँ यूनान में भी वर्णित है। वहाँ के मानव समाज का विकास 5 युगों - स्वर्णयुग, रजतयुग, कास्ययुग, महाकाव्ययुग और लौह युग में संपन्न हुआ।

प्राचीन काल में कई यूरोपीय दार्शनिकों अरस्तु, युक्राइटिस, प्लेटो आदि ने मनुष्य के आदिकाल का उल्लेख अपने - अपने ढंग से किया है । यूनान और रोम के विचारकों ने आदिकालीन मनुष्य के जीवन में अभिरुचि दिखलाई परन्तु ऐसा कोई प्रयत्न नहीं किया जिससे मनुष्य के विकास का पता चले । 16 वीं से 18 वीं शताब्दी के बीच की अवधि में जब इटलीवासी प्राचीन वस्तुओं के संग्रह में लगे थे, उन्ही दिनों इंगलैंड में प्राचीन वस्तुओं के अध्ययन सम्बन्धी एक अन्य प्रकार के विषय का प्रादुर्भाव हुआ। John Glilight, John Stope, Willian Condan, Humfrey तथा John Nordan नामक विद्वानों ने अपनी रचनाओं का संकलन करने के सन्दर्भ में भूतत्व विवरण (Typographical account) प्रस्तुत किये । इस कार्य के लिए उन्हें ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का विस्तृत भ्रमण करके ज्ञान अर्जित करना पड़ा । Willian Condan का इस सन्दर्भ में विस्तृत योगदान 1586 ई. में Britanika प्रकाशन के साथ हुआ। इन्हें व्हीलर महोदय ब्रिटिश पुरातत्व का जनक मानते है । इन्ही के प्रयास से 1572 ई. में प्राचीन अवशेषों के विषय में विवरण प्रस्तुत करने के लिए एक संस्था का निर्माण हुआ। फिर 1720 ई. में “A Collection of Querious Discovered by Eminent Antiquarian” के नाम से प्रकाशित हुआ।

1750 - 1830 ई. की अवधि में अंग्रेज विद्वानों ने प्राचीन यूनान के अवशेषों को प्रकाश में लाया । इस खोज से प्राचीन वस्तुओं के अध्ययन में काफी बल मिला । पाश्चात्य जगत को मिस्त्र के भी गौरवशाली अस्तित्व का वास्तविक ज्ञान 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही प्राप्त हुआ । 18 वीं शताब्दी में अनेक संस्थाओं की स्थापना की गई जिसके माध्यम से प्रकृति के इतिहास और पुरातत्व वस्तुओं के अध्ययन के विकास का

मार्ग प्रशस्त हो गया । इसमें लंदन की दो संस्था Society of Antiquaries of Landon तथा Society of Dilentity प्रमुख है ।

पुरातत्व के इतिहास में 19 वीं शताब्दी का वही महत्व है जो किसी भूखे इन्सान को अन्न खाने का महत्व होता है क्योंकि इस अवधि में पुरातत्व से सम्बंधित वैज्ञानिक विधियों का विकास हुआ तथा महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोज संपन्न किये गए । इंग्लैण्ड, फ़्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, बेल्जियम, स्वीटजरलैंड, स्वीडन, लैटिन अमरीका आदि देशों के जिज्ञासु शोधकर्ताओं की साधना के फलस्वरूप ही पुरातत्व को वैज्ञानिक स्वरुप प्रदान करना सम्भव हुआ। प्राचीन मिस्त्र, मेसोपोटामिया और ईरान की प्राचीन लिपियाँ पढ़ ली गयी । उत्खनन कर्ताओं में Colt Hoare का नाम उल्लेखनीय है । उन्होंने 379 कब्रों को सावधानी के साथ खोदा ।

डेनमार्क संग्रहालय के पहले क्यूरेटर Thomson महोदय ने वहाँ के राष्ट्रीय संग्रहालय की प्राचीन वस्तुओं को तीन वर्गों में विभाजित किया। वे वर्ग थे पत्थर ताम्बे और लोहे की बनी वस्तुएँ, तथा इनको अलग - अलग रखा । इस प्रकार जो विभाजन हुआ इससे प्राचीन वस्तुओं के अध्ययन में एक विशिष्ट व्यवस्था का सूत्रपात हुआ और साथ ही साथ इससे मानव सभ्यता के तीन क्रमिक युगों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा हुई और आगे होने वाले अध्ययन इन्ही तीन श्रेणियों में बांटकर किया जाने लगा ।

Thomson के त्रियुग सिद्धान्त से राष्ट्रीय संग्रहालय के मार्गदर्शक ग्रन्थ के रूप में भी प्रस्तुत किया । बाद में अनेक - अनेक आने वाले शिष्यों ने इस सिद्धान्त को और विकसित किया और फिर इसका अन्य देशों में भी प्रचार - प्रसार किया । Thomson

लिखित यह गाइड 1836 ई. में प्रकाशित हुई और यह 19 वीं शती के प्रकाशित पुरातत्वों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना मानी गयी। पुरातत्व के इतिहास में 1859 भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी वर्ष डार्विन के "Origin of Species का प्रकाशन हुआ और सही अर्थ में प्राक् इतिहास का अस्तित्व भी इसी वर्ष से माना जाने लगा।